देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है।टेक।।

जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा-दृष्टि सुहाया है।।१।।

कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नसाया है।।२।।

शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआं उड़ाया है।।३।।

जीवन-मरन अलाभ लाभ जिन, सबको साम्य बनाया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, दौल तास जस गाया है।।४।।